Toppersnotes
Unleash the topper in you

बिहार (STET)

हिन्दी

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (BSEB)

भाग – 3

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
1.	**काव्य शास्त्र** ➢ काव्य रस ➢ अलंकार ➢ छंद	 1 14 37
2.	**व्याकरण** ➢ सर्वनाम ➢ संधि ➢ समास ➢ उपसर्ग ➢ प्रत्यय ➢ पर्यायवाची शब्द ➢ विलोम शब्द ➢ वाक्य शुद्धिकरण	 47 51 77 93 100 112 118 128
3.	**प्रमुख हिन्दी पत्र**	134
4.	**पुरस्कृत रचनाएँ**	139
5.	**राजभाषा, राष्ट्रभाषा**	142

1 CHAPTER

काव्य शास्त्र

काव्य रस

रस शब्द की उत्पत्ति एवं अर्थ

- रस शब्द "रस" धातु में *अच् (अ)* प्रत्यय के जुड़ने से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है = आनंद, अर्थात किसी भी पदार्थ से यदि हमें किसी आनंद की प्राप्ति होती है, तो उसे ही रस कहा जाता है।
- साहित्य के क्षेत्र में किसी भी काव्य रचना को पढ़ने या सुनने पर यदि हमें किसी आनंद की प्राप्ति होती है, तो उसे **काव्य रस** कहा जाता है।
- व्याकरण ग्रंथों में रस शब्द की व्युत्पत्ति के लिए निम्नलिखित दो सूत्र प्रतिपादित किए गए हैं:
  - ✓ **सूत्र - "रस्यते आस्वाद्यते इति रसः।"** जिसका आस्वादन किया जाता है, या स्वाद ग्रहण किया जाता है, उसे रस कहते हैं।
  - ✓ **सूत्र - "सरते इति रसः।"** अर्थात जो प्रवाहित होता है, उसे रस कहते हैं।
- यहाँ प्रवाहित होना अर्थ को प्रकट करने के लिए "सर" शब्द का प्रयोग किया गया है। इसी 'सर' शब्द का वर्ण-विपर्यय करके, अर्थात परस्पर स्थान परिवर्तन करके, 'रस' शब्द बनाया गया है।

रस की परिभाषा और रस-सूत्र

- ई. पू. प्रथम शताब्दी में उत्पन्न होने वाले **आचार्य भरतमुनि** रस सम्प्रदाय के प्रवर्तक माने जाते हैं। 8 रस माने जाते हैं।
- **काव्य के 10 गुण व** 10 **दोष** इन्होंने स्वरचित **नाट्यशास्त्र** रचना में रस का विस्तार से वर्णन किया है।
- इस रचना में कुल **36** अध्याय प्राप्त होते हैं और लगभग **5000 श्लोक** हैं, जिनमें से **छठे अध्याय (षष्ठ अध्याय) व सातवें अध्याय** में रस की परिभाषा के लिए आचार्य भरतमुनि ने निम्नलिखित रस-सूत्र प्रतिपादित किया है:
- → **रस** सूत्र **- "विभावानुभावव्यभिचारि संयोगाद्रसनिष्पत्तिः।" अर्थात,** विभाव, अनुभाव एवं व्यभिचारी भावों के संयोग से ही रस की निष्पत्ति होती है।
- इस सूत्र के व्याख्याता आचार्य, या रस-निष्पत्ति के प्रमुख सिद्धांत – आचार्य भरतमुनि द्वारा प्रतिपादित उपर्युक्त रस-सूत्रों की अलग-अलग विद्वानों द्वारा व्याख्याएं की गई हैं।
- इन विद्वानों ने रस-सूत्र में प्रयुक्त 'संयोग' एवं 'निष्पत्ति' शब्दों के विभिन्न अर्थ ग्रहण किए हैं।
- इन सभी व्याख्याकारों में निम्नलिखित **4 विद्वान सर्वाधिक प्रसिद्ध** हुए हैं, जिन्हें ही इस सूत्र के **व्याख्याता आचार्य** नाम से पुकारा जाता है। एवं इनकी व्याख्याओं को **रस निष्पत्ति सिद्धांत** के नाम से जाना जाता है।
- यहाँ पूरा पाठ शुद्ध और सुव्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसमें सभी वर्तनी संबंधी त्रुटियाँ सुधारी गई हैं और → (तीर चिह्न) यथावत् रखे गए हैं:
- **तुलसीदास** → "गिरा अरथ जल वीचि सम, कहियत भिन्न भिन्न।"
- **कालक्रमानुसार, ये 4 प्रमुख व्याख्याता निम्नलिखित माने गए हैं:**

1. भट्ट लोल्लट → उत्पत्तिवाद एवं आरोपवाद
2. शंकुक → अनुमितिवाद एवं कलाप्रतीतिवाद
3. भट्ट नायक → भुक्तिवाद
4. अभिनवगुप्त → अभिव्यक्तिवाद एवं व्यक्तिवाद

1. भट्ट लोल्लट

- इनके द्वारा प्रतिपादित रस-सिद्धांत को **उत्पत्तिवाद एवं आरोपवाद** के नाम से जाना जाता है।
- इन्होंने **'संयोग' शब्द का अर्थ** → उत्पत्तिक (उत्पादक), गम्य – गमक, पोष्य – पोषक संबंध **'निष्पत्ति' शब्द का अर्थ** → उत्पत्ति, प्रतीति और पुष्टि ग्रहण किया है। इनके अनुसार, **मूल पात्र में ही रस की निष्पत्ति** मानी जाती है।

NOTE: डॉ. नगेन्द्र ने इनके द्वारा प्रतिपादित 'उत्पत्ति + प्रतीति + पुष्टि' को एक साथ मिलाकर **उपचिति** नाम से पुकारा है।

2. शंकुक

- इनके द्वारा प्रतिपादित रस-सिद्धांत को → **अनुमितिवाद एवं कलाप्रतीतिवाद** के नाम से जाना जाता है। → इन्होंने **'संयोग' शब्द का अर्थ** → अनुमान → तथा **'निष्पत्ति' शब्द का अर्थ** → अनुमिति ग्रहण किया है। → इनके द्वारा प्रतिपादित रस-सिद्धांत को **दर्शनशास्त्र के चित्ततुरंग न्याय सिद्धांत** पर आधारित माना गया है।

3. भट्ट नायक

- इनके द्वारा प्रतिपादित रस-सिद्धांत को → **भुक्तिवाद** के नाम से जाना जाता है।
- इन्होंने **'संयोग' शब्द का अर्थ** → भोज्य–भोजक संबंध, **'निष्पत्ति' शब्द का अर्थ** → भुक्ति ग्रहण किया है।
- इन्होंने रस की निष्पत्ति के **3 प्रमुख व्यापार** माने हैं:
  - ✓ **अभिधा**: वह शब्द या वाक्य का मुख्य अर्थ या लोकप्रसिद्ध अर्थ ग्रहण करता है।
  - ✓ **भावकत्व**: विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी भाव एवं स्थायी भाव के आधार पर साधारणीकरण। **भट्ट नायक** ही वह विद्वान माने जाते हैं, जिन्होंने सर्वप्रथम **साधारणीकरण** की स्पष्ट अवधारणा प्रस्तुत की।
  - ✓ **भोजकत्व**: सत्त्व, रज, तम — इन तीनों गुणों में से **सत्त्वगुण की प्रधानता** के आधार पर काव्य-रस (आनंद) का भोग करना, अर्थात रस को पूर्णत: प्राप्त करना।
- **विशेष:- इस शास्त्र के अंतर्गत साधारणीकरण की अवधारणा प्रस्तुत करने वाले सर्वप्रथम विद्वान भी भट्ट नायक ही माने जाते हैं।**

4. अभिनवगुप्त

- इनके द्वारा प्रतिपादित रस-सिद्धांत को → **अभिव्यक्तिवाद एवं व्यक्तिवाद** के नाम से जाना जाता है।
- इन्होंने: **'संयोग' शब्दों का अर्थ** → व्यंग्य–व्यंजक संबंध **'निष्पत्ति' शब्दों का अर्थ** → अभिव्यक्ति के रूप में ग्रहण किया है।
- इनका रस-सिद्धांत → **व्यंजना शब्दशक्ति** पर आधारित माना जाता है।
- यह सिद्धांत → **आचार्य आनंदवर्धन के ध्वनि-सिद्धांत** पर आधारित माना जाता है।
- इन्होंने अपने रस-सिद्धांत में **भट्ट नायक** के 'भावकत्व' एवं 'भोजकत्व' की अवधारणा को निरस्त करके, **व्यंजना** की अवधारणा को स्वीकार किया।
- **व्यंजना की अवधारणा को स्वीकार किया।** रस की विवेचना करते हुए इन्होंने लिखा है:

  "सहृदयों के अंतःकरण में कुछ भाव नित्य वासना या संस्कार रूप में विद्यमान रहते हैं।"
- वासना रूप में विद्यमान ये स्थायीभाव जब उद्बुद्ध या जाग्रत हो जाते हैं, तब ही सामान्य मनुष्य को उसकी अनुभूति होती है।
  सामान्य मनुष्य = [सामाजिक सहृदय पाठक]

रस की प्रमुख विशेषताएँ:

"सत्त्वोद्रेकः अखण्डः स्वप्रकाशानन्द चिन्मयः वेद्यान्तरस्पर्शशून्यः ब्रह्मानन्दसहोदरः लोकोत्तरचमत्कारप्राणः केश्चिद् प्रमातृभिः। स्वाकारवदभिन्नत्वे नाथमास्वाद्यते रसः।।" [स्व + आकारवत् + अभिन्न] —

- आचार्य विश्वनाथ आचार्य विश्वनाथ ने अपनी *साहित्यदर्पण* रचना में रस की निम्नलिखित विशेषताएँ प्रतिपादित की हैं। यथा -
  - ✓ रस सत्त्वोद्रेकमय होता है
  - ✓ रस अखण्ड होता है
  - ✓ रस स्वप्रकाशानन्द होता है
  - ✓ रस चिन्मय होता है
  - ✓ रस वेद्यान्तरस्पर्शशून्य होता है
  - ✓ रस ब्रह्मानन्दसहोदर होता है
  - ✓ रस लोकोत्तर चमत्कारप्राण, अर्थात् अलौकिक होता है
  - ✓ रस स्वाकारवदभिन्न होता है
- अन्य विशेषताएँ:
  - ✓ रस आस्वाद्य होता है।
  - ✓ रस व्यंग्य होता है।

रस / आनंद की कोटियाँ – 3

- आचार्य पंडितराज जगन्नाथ ने स्वरचित *रसगंगाधर* रचना में रस / आनंद की प्रमुखतः 3 कोटियाँ मानी हैं –

1. विषयानन्द → सांसारिक सुख-सुविधाओं, भोग-विलास की वस्तुओं से प्राप्त होने वाला आनंद।

2. ब्रह्मानन्द → योग-साधना या ईश्वर-भक्ति से प्राप्त होने वाला आध्यात्मिक आनंद।

3. काव्यानन्द → किसी भी काव्य रचना को पढ़ने या सुनने से प्राप्त होने वाला आनंद।

रस के अवयव / अंग – 3

- आचार्य भरतमुनि द्वारा प्रतिपादित उपर्युक्त रस-सूत्र में रस के प्रमुख तीन अंग माने गए हैं: यथा -
  - ✓ विभाव → कारण
  - ✓ अनुभाव → चेष्टा
  - ✓ व्यभिचारी भाव
- इन तीनों का संयोग होने पर एक स्थायी भाव भी उत्पन्न होता है, जिसके आधार पर ही रस की पहचान होती है। इस प्रकार, रस के प्रमुखतः 4 अंग या अवयव माने जाते हैं।

प्रश्न 1: भरतमुनि के अनुसार रस के अंग = 3

प्रश्न 2: रस के कितने अंग होते हैं? = 4

रस के 4 अंग / अवयव

1. विभाव
2. अनुभाव
3. व्यभिचारी भाव या संचारी भाव
4. स्थायी भाव

1. विभाव

- इसका शाब्दिक अर्थ होता है — *कारण* — अर्थात् जिन प्रमुख कारणों से किसी रस की उत्पत्ति होती है, वे कारण ही विभाव कहलाते हैं।
- **विभाव दो प्रकार के होते हैं:**
  1. आलंबन विभाव
  2. उद्दीपन विभाव

1. आलंबन विभाव → रस की उत्पत्ति के सजीव कारणों को ही आलंबन विभाव कहा जाता है। यदि किसी प्राणी विशेष के कारण किसी रस विशेष की उत्पत्ति होती है, तो वह प्राणी विशेष ही उस रस का आलंबन विभाव कहलाता है।

उदाहरण:

- शृंगार रस में: पति-पत्नी / प्रेमी-प्रेमिका / नायक-नायिका
- हास्य रस में: विचित्र आकार या वेशभूषा वाला व्यक्ति

- करुण रस में: प्रियजन का मृत शरीर
- रौद्र रस में: दुराचारी या देशद्रोही व्यक्ति
- वीर रस में: शत्रु या विपक्षी
- भयानक रस में: शेर, चीता, भालू आदि
- वीभत्स रस में: सड़ी-गली लाशें
- अद्भुत रस में: आश्चर्य उत्पन्न करने वाली वस्तु / व्यक्ति
- शांत रस में: ईश्वर-भाव से युक्त व्यक्ति (साधु, संन्यासी, योगी)
- **आलंबन विभाव के दो उपभेद:**

  (अ) आश्रय – जिसके हृदय में रस उत्पन्न होता है।

  (ब) विषय (या शुद्ध आलंबन) – जिसे देखकर रस की उत्पत्ति होती है।
- **जैसे: "राम को रूप निहारति जानकी, कंकन के नग की परिछाँहि। यातै सबै सुधि भूलि गई, कर टेकी रही पलटाय नाँहि।।"** प्रस्तुत पद में राम को देखकर सीता के हृदय में शृंगार रस की उत्पत्ति हुई है। अतः यहाँ → सीता = आश्रय तथा राम = विषय (आलंबन) माना जाएगा।
- **जैसे: "अखिल भुवन चर अचर सब, हरि मुख में लखि मातु। चकित भई, गदगद वचन, हर्षित दृग, पुलकातु।।"**
- प्रस्तुत पद में बालक कृष्ण के मुख में सम्पूर्ण ब्रह्मांड देखकर माता यशोदा के हृदय में अद्भुत रस की उत्पत्ति हुई है। अतः यहाँ माता यशोदा = आश्रय तथा बालक कृष्ण = विषय माना जाएगा।

2. उद्दीपन विभाव

- रस की उत्पत्ति के निर्जीव कारणों को ही उद्दीपन विभाव कहा जाता है। → अर्थात् यदि किसी प्राकृतिक दृश्य विशेष को देखकर किसी रस की अनुभूति होती है, तो वह दृश्य ही उद्दीपन विभाव कहलाता है।
- **उद्दीपन का शाब्दिक अर्थ:** प्रेरित करना या जाग्रत करना होता है। अतः यह कहा जा सकता है कि किसी भी रस की उत्पत्ति को जाग्रत या प्रेरित करने वाले तत्त्व या कारण ही उद्दीपन विभाव कहलाते हैं।

1. शृंगार रस में:

- ✓ पुष्पवाटिका (फूलों का बाग)
- ✓ लता कुंज
- ✓ मित्र या सहेली द्वारा कही गई प्रेम भरी बातें
- ✓ उद्यान भ्रमण
- ✓ वन विहार
- ✓ नदी तट
- ✓ चाँदनी रात

2. हास्य रस में: → किसी व्यक्ति का विचित्र आकार या विचित्र वेशभूषा

3. करुण रस में: → श्मशान घाट / मरघट आदि का दृश्य → मृत प्रियजन की प्रिय वस्तुएँ

4. रौद्र रस में: → दुराचारी या देशद्रोही व्यक्ति के द्वारा कही गई कड़वी बातें या किए गए कटु कार्य

5. वीर रस में: → युद्धभूमि का दृश्य — जैसे ढोल-नगाड़े, शंख बजना, अथवा शत्रु द्वारा किए गए वीरतापूर्ण कार्य

6. भयानक रस में: → सुनसान जंगल, अंधकार आदि का दृश्य → इधर-उधर से आती विचित्र डरावनी आवाजें

7. वीभत्स रस में: → जानवरों द्वारा शवों को नोंचना → लाशों में कीड़ों का कुलबुलाना

8. अद्भुत रस में: → आश्चर्य उत्पन्न करने वाली घटना या किसी व्यक्ति द्वारा कही गई आश्चर्यपूर्ण बातें

9. शांत रस में: → भजन, कीर्तन, सत्संग, हरि-कीर्तन, हरि-जस इत्यादि

"सिर पर बैठ्यो काग, आँख दोउ खात निकारता। खींचत जीभहिं, स्यार अतिहि आनंद उर धारता।।"

(i) रस → वीभत्स रस

(ii) आलंबन विभाव → (क) आश्रय: पाठक / दर्शक (ख) विषय: शव / लाश

(iii) उद्दीपन विभाव (निर्जीव कारण) कौए के द्वारा आँख को निकालना सियार के द्वारा जीभ का खींचना

2. अनुभाव

- **अनुभाव** का शाब्दिक अर्थ होता है: **चेष्टा** → अर्थात किसी भी रस की उत्पत्ति के समय आलंबन विभाव के द्वारा जो चेष्टाएँ प्रकट की जाती हैं, उन्हें **अनुभाव** कहा जाता है।
- **अनुभाव भी 4 प्रकार के माने जाते हैं: यथा –**
  1. कायिक / आंगिक या यत्नज अनुभाव
  2. वाचिक अनुभाव
  3. आहार्य अनुभाव – 9वीं शताब्दी में भानुदत्त ने सर्वप्रथम माना है
  4. सात्विक या अयत्नज अनुभाव
- **आचार्य** भरतमुनि के द्वारा अनुभाव के **3 भेद** ही माने गये थे।
- उन्होंने आहार्य अनुभाव को स्वीकार नहीं किया था।
- आहार्य अनुभाव का प्रतिपादन करने वाले सर्वप्रथम विद्वान आचार्य **भानुदत्त** माने जाते हैं।

1. कायिक / आंगिक / यत्नज अनुभाव

- किसी भी रस की उत्पत्ति के समय, आलंबन विभाव (मुख्यतः आश्रय) के द्वारा अपने शरीर से जान-बूझकर, प्रयत्नपूर्वक की गई चेष्टाएँ **कायिक / आंगिक / यत्नज अनुभाव** कहलाती हैं।
- **उदाहरण –**
  - ✓ किसी की ओर देखकर मुस्कराना
  - ✓ आँख दिखाना
  - ✓ कटाक्ष करना
  - ✓ थप्पड़ या मुक्का मारने दौड़ना
  - ✓ पीटना आदि चेष्टाएँ → इत्यादि चेष्टाएँ **कायिक / आंगिक / यत्नज अनुभाव** मानी जाती हैं।
- **उदाहरण पद –**

  "बहुरि वदन विधु आँचल ढाँकी। पियतन चित्तै मोह करी बाँकी।।
  खंजन मंजु तिरिछै नैननि। नियपति कहउ तिनहिं सिय सैनीन।।"
- ग्रामीण महिलाओं के द्वारा सीता के संबंध में पूछे जाने पर सीता के द्वारा आँचल से मुख को ढकना, तीखी नजरों से राम की ओर देखना आदि चेष्टाएँ जान-बूझकर प्रकट की गई हैं। अतएव इस पद में **कायिक अनुभाव** माना जाएगा।

  "मेवाड़ केसरी देख रहा, केवल रण का न तमासा था।
  वह दौड़-दौड़ रण करता था, वह मान-रक्त का प्यासा था।"
- प्रयत्नपूर्वक की गई चेष्टा = **कायिक अनुभाव** → प्रस्तुत पद में मेवाड़ केसरी महाराणा प्रताप द्वारा दौड़-दौड़ कर रण करना प्रयत्नपूर्वक की गई चेष्टा है। → अतः इस पद में यह **कायिक अनुभाव** माना जाएगा।

2. वाचिक अनुभाव

- **वाचिक** का शाब्दिक अर्थ है → मुख से बोलना।
- रस उत्पत्ति के समय, आलंबन विभाव द्वारा मुख से बोलकर की गई चेष्टाएँ **वाचिक अनुभाव** कहलाती हैं।
- **उदाहरण पद –**

  "बतरस लालच लाल की, मुरली दई लुकाय। सौंह करै भौंहनि हँसे, देन कहि नटि जाय।।"

अनुभाव प्रकार	उदाहरण
वाचिक अनुभाव	राधा द्वारा मुरली न देना, बोलकर मना करना
कायिक अनुभाव	राधा द्वारा भौंहों से हँसना, मुखाकृति बदलना

NOTE: → तीसरे चरण में राधा द्वारा अपने शरीर से जान-बूझकर की गई चेष्टाएँ भी वर्णित हैं, अतः वहाँ **कायिक अनुभाव** भी माना जाएगा। → परंतु पूरे पद में पूछे जाने पर यह **वाचिक अनुभाव** माना जाएगा।

3. आहार्य अनुभाव

- **आहार्य** का शाब्दिक अर्थ होता है – वेशभूषा। → जब किसी पद में आलंबन विभाव की वेशभूषा का वर्णन किया जाता है, तो वह **आहार्य अनुभाव** माना जाता है।
- उदाहरण –

  "सखा साथ में वेणु ... हाथ में, ग्रीवा में वनमाला। केकी किरीट, पीत पट भूषित, रज रंजित लट वाला।।"

  "सीस मुकुट, कटि काछनि, कर मुरली, उर माल। एहि बानिक मो मन सदा, बसौ बिहारीलाल ॥"
- दोनों पदों में कृष्ण के बाल रूप की वेशभूषा का वर्णन किया गया है। अतः **आहार्य अनुभाव** माने जाते हैं।

4. सात्विक या अयत्नज अनुभाव

- रस की उत्पत्ति के समय आलंबन विभाव के शरीर से स्वतः होने वाली चेष्टाएँ सात्विक या अयत्नज अनुभाव कहलाती हैं।
- इनकी कुल संख्या 8 मानी जाती है:
  1. **स्तम्भ** – शरीर का स्थिर हो जाना
  2. **स्वरभंग** – आवाज़ का न निकलना
  3. **स्वेद** – पसीना आना
  4. **वेपथु (कंपन)** – शरीर का काँपना
  5. **वैवर्ण्य** – चेहरे का रंग उड़ जाना
  6. **अश्रुपात** – आँखों से आँसू गिरना
  7. **रोमांच** – रोम-रोम खड़ा होना
  8. **प्रलय** – बेहोश या मूर्च्छित हो जाना
- सूत्र: "तीन 'स' (स्तम्भ, स्वरभंग, स्वेद) पर दो 'व' (वेपथु, वैवर्ण्य) ने एक आरोप (अश्रुपात, रोमांच, प्रलय) लगाया है।"

सात्विक अनुभाव के उदाहरण:

1. **"कान्ह को देखति देवता सी, वृषभान लली न हिली, न चली।" → सात्विक में (स्तम्भ)** अनुभाव
2. **"देखि सियमुख अति सुख पावा, हृदय सराहत वचन न आवा।" → सात्विक में (स्वरभंग)** अनुभाव
3. **"पुरते निकसी रघुवीर वधू, धरि धीर धीरै मग में डग द्वै। झलकि भरी भाल कनि जल की, पुटि सूखि गए मधुराधर वै।" → सात्विक में (स्वेद)** अनुभाव
4. **"अति प्रफुल्लित बालक वृंद का वदन मंडल भी कुम्हला गया।" → (वैवर्ण्य) सात्विक अनुभाव**
5. **"पुनि-पुनि प्रभुहि चितव नरनाहू, पुलक गात उर कुमार। अधिक उछाहू।। → सात्विक में (रोमांच)** अनुभाव
6. **"रामहि चितहि रहेउ नरनाहू, चला विलोचन वारि प्रवाहू।" → सात्विक में (अश्रुपात)** अनुभाव
7. **"शोक विकल सब रोवहिं रानी। रूप, शील, बल, तेज, बखानी। करहिं विलाप अनेक प्रकारा, परहिं भूमितल बारहिं बारा।। → सात्विक में (प्रलय)** अनुभाव
8. **"ध्यान आनि हिय प्रानपति, रहति मुदित दिन-राति। पलकु कँपति, पुलकति पलकु, पलकु पसीजति जाति।" → प्रस्तुत पद में सात्विक अनुभाव नहीं है।** (क) वेपथु (ख) रोमांच (ग) स्वेद (घ) प्रलय → इनमें से कोई भी स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं है, अतः *सात्विक अनुभाव नहीं* माना गया।

3. <u>व्यभिचारी भाव / संचारी भाव</u>

- **स्थायी भाव** के साथ-साथ कुछ **सहायक भाव** भी उत्पन्न होते हैं, जो थोड़े समय के लिए उपस्थित होकर फिर लुप्त हो जाते हैं।
- इन्हें ही **व्यभिचारी भाव** या **संचारी भाव** कहा जाता है।
- ये स्थायी भाव के **सहकारी कारण** होते हैं।
- **उपमा**:
  - ✓ पानी के बुलबुले
  - ✓ बिजली की चमक
- **कुल संख्या** = 33 → याद रखने हेतु **डॉ. प्रकाश श्रीमाली** द्वारा प्रतिपादित सूत्र:

  सूत्र: "पाँच व तीन उ चार अ-म, दो-दो ग-च-श-स-आ-न, एक-एक ज-त-द-ध-ह, फिर"

क्रमानुसार व्यभिचारी / संचारी भाव: = 33

1. **व्याधि** – शारीरिक रोग / पीड़ा
2. **ब्रीड़ा** – लज्जा
3. **विबोध** – ज्ञान / जागरण
4. **वितर्क** – तर्क / बहस
5. **विषाद** – दुःख / शोक
6. **उग्रता** – क्रोध / उतावलापन
7. **उत्सुकता** – जानने की तीव्र इच्छा
8. **उन्माद** – पागलपन
9. **असूया** – ईर्ष्या
10. **अमर्ष** – असहिष्णुता / क्रोध
11. **अवहित्था** – लज्जा को छिपाना
12. **अपस्मार** – मिर्गी, मूर्छा (मुख से झाग निकलना)
13. **मद** – अहंकार / नशा
14. **मोह** – अत्यधिक आसक्ति
15. **मति** – समझ / बुद्धि
16. **मरण** – मृत्यु
17. **गर्व** – अभिमान
18. **ग्लानि** – पश्चाताप
19. **चपलता** – चंचलता
20. **चिन्ता** – मानसिक तनाव
21. **शंका** – संदेह
22. **श्रम** – थकान / परिश्रम
23. **स्वप्न** – सपना
24. **स्मृति** – याद
25. **आलस्य** – सुस्ती
26. **आवेग** – आवेग / अधीरता
27. **निद्रा** – नींद
28. **निर्वेद** – वैराग्य / अरुचि
29. **जड़ता** – निष्क्रियता
30. **त्रास** – भय
31. **दैन्यता** – दीनता / विवशता
32. **धृति** – धैर्य
33. **हर्ष** – आनंद / प्रसन्नत

उदाहरण:

- **"भजन कह्यो ताते भज्यो, भज्यो न एको बार। दूर भजन जाते कह्यो, सो तू भज्यो गवार॥"** → धिकारने के कारण = (निर्वेद)
- **"सोचु सुमंतु विकल दुख दीना । धिक् जीवन रघुवीर विहीना॥"** [राम खुद को] → धिकारने के कारण = (निर्वेद)
- **"लागि गई पलकें पल सों, पल लागत ही पल में पिव आयें।"** → नींद आते ही सपने में पिया आ गए = (स्वप्न)
- **"उत्तर दिशा में जाते ही, सहसा याद उत्तरा की आ गई।"** → (पूर्व स्मृति का अचानक जागना) = (स्मृति)
- **"पायन की सुधि भूलि गई, अकुलाय महावर आँखिन दीन्हों।"** → बिना सोचे-समझे कार्य करना = (आवेग)
- **"होइ अचेत परी धरनी, पटकै कद उर फैन तुजें मुख ते॥"** → मुख से झाग आना = (अपस्मार)
- **"मो सम कौन कुटिल खल कामी।"** → स्वयं को दीन और पापी मानना = (दैन्य)
- **"पुर तें निकसी रघुवीर वधू, धरि धीर धीरै मग में डग द्वै। झलकि भरी भाल कनि जल की, पुटि सूखि गए मधुराधर वै॥"** → श्रम के कारण पसीना आना = (स्वेद)
- **"भाखे लखन कुटिल भई भौं है। रद पर परकत [नयन कोध आने परदा] सिरौहे"** → (अमर्ष)
- **"अति रिस बोले बचन कठोर / कहु जड़ जनक धनुष को तेरा"** → (अमर्ष)
- **"हे सारथे! हे द्रोण क्या! आवें स्वयं देवेन्द्र भी, वे भी न जीतेंगे समर में – भाज क्या मुझसे की॥"** → (वीरता होने के कारण) = (गर्व)
- **"छिन रोवति, छिन हँसि उठति, छिन बोलति, दिन मौन।"** → (पागलपन में काम करना) = (उन्माद)
- **"अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम। दास मूलका कह गए, सबको दाता राम॥"** → (आलस्य)
- **"ललन चलन सुनि पलन में, अँसुवा दरिकै आय। गई, लखाई॥ न सखीन्हु, झूवै ही जमुहाय"** → (अवहित्था)

- **"परतिय दोषु पुराणु सुनि, लखि मुलकि सुखदानि। कसि करि राखि मिश्रा डूँ मुँह आई मुसकानि॥"** → लज्जा को छिपाने का भाव = (अवहित्था)
- **"कण देबो सौम्यौं ससुर, बहू भूरहयि जानि। रूप रहचटै लगि लग्यो, भाँगनु सबु जगु आनि॥"** → (हर्ष) = प्रसन्नता का भाव
- **"राम को रूप निहारति जानकी, कंकन के नग की परिख्यांहि। यातै सबै सुधि भूलि गई, कर टेकि रही, पल टारत नाँहि"** → (जड़ता) = पूर्ण स्थिरता, चेतना का रुक जाना

संचारी भावों से संबंधित अन्य विशेष तथ्य

- **देव** कवि ने **'छल'** नामक एक नया संचारी भाव प्रतिपादित करते हुए कुल **34 संचारी भाव** माने हैं।
- **आचार्य केशवदास** ने **'विवाद'** एवं **'आधि'** नामक दो नए संचारी भाव प्रतिपादित करते हुए कुल **35 संचारी भाव** स्वीकार किए हैं।
- **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** ने इन सभी संचारी भावों को निम्नानुसार **चार श्रेणियों** में विभाजित किया है – **यथा** :
  1. सुखात्मक संचारी भाव
  2. दुःखात्मक संचारी भाव
  3. उभयात्मक संचारी भाव
  4. उदासीन संचारी भाव
- **डॉ. राकेश गुप्त** ने भी इन संचारी भावों को चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया है –
  1. शुद्ध भाव / मनोविकार – 14
  2. ज्ञानात्मक संचारी भाव
  3. शारीरिक संवेदना वाले संचारी भाव – 5
  4. मानसिक संवेदना विहीन संचारी भाव – 10

4. स्थायी भाव

- प्रत्येक रस में ऐसा एक भाव अनिवार्य रूप से विद्यमान रहता है, जो उस रस की उत्पत्ति से लेकर अंत तक साथ बना रहता है – **इसी भाव को स्थायी भाव कहा जाता है**।
- सामान्यतः: "सहृदय के अंत:करण में जो भाव, मनोविकार, नित्य वासना या संस्कार रूप में सदा विद्यमान रहते हैं तथा जिन्हें विरोधी या अविरोधी कोई भी दबा नहीं सकता है, वे ही स्थायी भाव कहलाते हैं।"
- स्थायी भाव "मानव मन में बीज रूप में लंबे समय तक अचंचल रहते हुए निवास करते हैं।"
- स्थायी भावों को **संस्कार या भावना का द्योतक** भी माना जाता है।
- स्थायी भाव सभी मनुष्यों में सदैव उसी प्रकार विद्यमान रहते हैं जिस प्रकार **मिट्टी में गंध समाई रहती है**।
- प्रत्येक रस का एक निश्चित स्थायी भाव होता है।

यथा : ''रतिर्हासश्च शोकश्च क्रोधोत्साहो भयं तथा। जुगुप्सा विस्मयश्चैव, एषां शान्तोऽपि च स्मृतः।।''

रसों की संख्या

- उपर्युक्त 9 स्थायी भावों के आधार पर साहित्य जगत में प्रमुखतः **9 रस** स्वीकार किए जाते हैं:

''श्रृंगार हास्य करुण रौद्र वीर भयानक वीभत्स अद्भुत शान्त''

क्रम	रस का नाम	स्थायी भाव	देवता	वर्ण
1	श्रृंगार	रति	विष्णु	श्याम
2	हास्य	हास	शिव (शांत मुद्रा)	श्वेत
3	करुण	शोक	यमराज	कपोत
4	रौद्र	क्रोध	रुद्र (क्रोध मुद्रा)	रक्त
5	वीर	उत्साह	महेन्द्र	हेम / स्वर्ण

6	भयानक	भय	भूत	कृष्ण
7	वीभत्स	जुगुप्सा (घृणा)	महाकाल	नील
8	अद्भुत	विस्मय	गंधर्व	पीत
9	शान्त	निर्वेद	श्री नारायण	कुंद / चंद्र
10	वात्सल्य	वात्सल्य	-	-
11	भक्ति	आस्था	-	-

रस विवेचन का संक्षिप्त इतिहास

- रस **का सर्वप्रथम विवेचन ई. पूर्व प्रथम शताब्दी में आचार्य भरतमुनि** ने अपनी **'नाट्यशास्त्र'** रचना में किया।
- उन्होंने कुल **8 रस** स्वीकार किए थे। (रस सम्प्रदाय के प्रवर्तक – भरतमुनि)
  1. श्रृंगार
  2. हास्य
  3. करुण
  4. रौद्र
  5. वीर
  6. भयानक
  7. वीभत्स
  8. अद्भुत
- **12वीं शताब्दी** में आचार्य **मम्मट** ने **'काव्यप्रकाश'** रचना में **"शान्तोऽपि नवमो रसः"** यह कथन लिखकर **शान्त रस को नवें रस** के रूप में प्रतिष्ठित किया।

  Note: शांत रस को प्रतिष्ठित तो आचार्य मम्मट ने किया, परंतु **शांत रस की अवधारणा सर्वप्रथम प्रस्तुत करने वाले विद्वान आचार्य उद्भट** माने जाते हैं।
- **आचार्य मम्मट** ने ही **वात्सल्य (वत्सल)** को 10वें स्थायी भाव के रूप में स्वीकार किया, परंतु वे **इसे रस के रूप में प्रतिष्ठित नहीं कर सके**।
- **वात्सल्य रस को 10वें रस के रूप में प्रतिष्ठित करने वाले प्रथम विद्वान आचार्य विश्वनाथ** माने जाते हैं। इसका स्थायी भाव **वात्सल्य 17वीं शताब्दी** में आचार्य **पं. राज जगन्नाथ** ने '**रसगंगाधर**' में **भक्ति रस** को 11वें रस के रूप में प्रतिष्ठित किया। इसका स्थायी भाव – **आस्था (ईश्वर विषयक)**।
- **इस प्रकार** वर्तमान में साहित्य जगत में **मुख्यतः 9 रस** माने जाते हैं, → परंतु **हिन्दी साहित्य में वात्सल्य एवं भक्ति** को भी सम्मिलित करते हुए **कुल 11 रस** स्वीकार किए जाते हैं।
- **9वीं शताब्दी** में आचार्य **उदयभट्ट** ने '**काव्यालंकार सारसंग**' में सर्वप्रथम **शांत रस** का उल्लेख नवें रस के रूप में किया, **परंतु वे इसे प्रतिष्ठा नहीं दिला सके।**

रसों के उपभेद एवं अन्य जानकारियाँ

1. श्रृंगार रस

- ✓ *श्रृंगार* शब्द 'श्रृंग' + 'आर' के योग से बना है। यहाँ 'श्रृंग' = 'काम वासना' या 'विषय वासना' तथा 'आर' = 'गति', अर्थात काम वासना या विषय-वासना की गति को ही श्रृंगार कहा जाता है।
- ✓ श्रृंगार रस को सभी रसों का राजा (रसराज) भी कहा जाता है।
- ✓ संस्कृत साहित्य जगत में आचार्य भोजराज एवं **सूत्र** - *श्रृंगार करके देवता को भोग लगाओ* हिंदी श्रृंगार करके देवता में *देव कवि* एकमात्र श्रृंगार रस को ही रस रूप में स्वीकार करते हैं। अन्य सभी रसों को ये दोनों विद्वान श्रृंगार के सहायक रसों के रूप में मान्यता देते हैं।
- ✓ देव कवि ने इस संबंध में एक जगह लिखा है: **"भूलि कहत नवरस सुकवि सकल मूल श्रृंगार"**
- ✓ श्रृंगार रस के भी 2 उपभेद माने जाते हैं: **यथा-**
  - संयोग या संभोग श्रृंगार रस – नायक-नायिका का पास-पास/एक साथ होना।
  - वियोग या विप्रलंभ श्रृंगार रस – नायक-नायिका का अलग-अलग होना।
- ✓ वियोग या विप्रलंभ श्रृंगार के भी 3 स्थितियाँ मानी जाती हैं:

  (i) पूर्वराग (ii) मान (iii) प्रवास (*एक तरफा प्रेम – आपस में मनमुटाव।*)

- ✓ **वियोग श्रृंगार रस की 10 दशाएँ भी मानी जाती हैं:**
  1. अभिलाषा
  2. चिन्ता
  3. स्मृति
  4. उद्वेग
  5. गुणकथन
  6. प्रलाप
  7. उन्माद
  8. व्याधि
  9. जड़ता
  10. मरण

जैसे: "पिवं सुं कहु संदेसड़ा हे भँवरा हे काग । सो धनि विरहे जरी मुई, तेहिक धूआँ हम लांग ।।" **रस:** श्रृंगार रस **भेद:** वियोग, विप्रलंभ **स्थिति:** प्रवास **दशा:** मरण

2. हास्य रस

- ✓ हास्य रस के भी 6 उपभेद माने जाते हैं:
  1. स्मित हास्य – केवल मुस्कराना / दाँतों का बिल्कुल भी दिखाई न देना
  2. हसित हास्य – हँसते समय दाँतों का थोड़ा बहुत दिखाई देना
  3. विहसित हास्य – मधुर स्वर की हँसी
  4. उपहसित हास्य – हँसते समय शरीर या कंधों में कंपन होना
  5. अपहसित हास्य – हँसते समय आँसू भी टपक पड़ना
  6. अति हसित हास्य – जोर से दहाड़ मारकर हँसना / अट्टहास

3. करुण रस

- ✓ करुण रस के भी दो उपभेद माने जाते हैं:
  1. *स्वनिष्ठ करुण रस* – अपने किसी प्रियजन की मृत्यु से उत्पन्न होने वाली करुणा
  2. *परनिष्ठ करुण रस* – किसी अन्य व्यक्ति के शोक या विषाद / दुःख को देखकर उत्पन्न होने वाली करुणा
- ✓ संस्कृत साहित्य के महान कवि *भवभूति* ने एकमात्र करुण रस को ही रस रूप में मान्यता दी है। अन्य सभी रसों को वे करुण के सहायक रस के रूप में मानते हैं। अपनी **"उत्तररामचरितम्"** रचना में भवभूति ने एक जगह लिखा है: **"एको एव रस: करुणा निमित्तभेदान भिद्यते।"**

4. वीर रस

- ✓ वीर रस के भी 4 उपभेद माने जाते हैं:
  1. *युद्धवीर रस* – युद्धभूमि में प्रदर्शित वीरता या उत्साह
  2. *दानवीर रस* – दान देने में प्रदर्शित वीरता और उत्साह
  3. *दयावीर रस* – किसी प्राणी की रक्षा हेतु प्रदर्शित वीरता या उत्साह
  4. *धर्मवीर रस* – धर्म या सत्य की रक्षा के लिए प्रदर्शित वीरता या उत्साह

5. वीभत्स रस

- ✓ वीभत्स रस के भी 2 उपभेद माने जाते हैं:
  1. *क्षोभज वीभत्स रस* – युद्ध भूमि में पड़ी सड़ी-गली लाशों को देखकर उत्पन्न जुगुप्सा (घृणा)
  2. *उद्वेगी वीभत्स रस* – मल-मूत्र की गंदगी को देखकर उत्पन्न जुगुप्सा (घृणा)

6. अद्भुत रस

- ✓ अद्भुत रस के भी 2 उपभेद माने जाते हैं:
  1. *दिव्य दर्शनज अद्भुत रस* – किसी अलौकिक वस्तु / पदार्थ / व्यक्ति / घटना को देखकर उत्पन्न विस्मय
  2. *आनन्दज अद्भुत रस* – किसी लौकिक वस्तु / पदार्थ / घटना को देखकर उत्पन्न विस्मय

Unleash the topper in you

काव्य रस एवं भाव आभास की स्थितियाँ

कुछ पद ऐसे भी होते हैं जिनमें वास्तव में जो रस या भाव दिखलाई पड़ता है, वह नहीं होकर उस रस या भाव का आभास मात्र होता है। ऐसी स्थितियों को ही रसाभास या भावाभास की स्थिति के नाम से पुकारा जाता है। रस शास्त्र के अंतर्गत रस एवं भाव के अलावा भी निम्नलिखित 8 स्थितियाँ भी अलग से स्वीकार की जाती हैं: रस की कुल स्थितियाँ होती हैं:

1. रसाभास
2. भावाभास
3. भावोदय
4. भावशांति
5. भावसंधि
6. भावशबलता → अनेक भावों का मिश्रण (रंग-बिरंगा)
7. रस
8. भाव

1. रस भाव

- रसाभास शब्द रस + आभास के योग से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है "रस का आभास होना"। अर्थात् जब किसी पद में किसी रस के न होने पर भी उस रस का आभास होने लगता है, तो वहाँ रसाभास की स्थिति मानी जाती है।
- साहित्य दर्पणकार आचार्य विश्वनाथ ने निम्नलिखित प्रकार की स्थितियों को रसाभास के अंतर्गत शामिल किया है:
- विश्वनाथ ने निम्नलिखित स्थितियों को माना है:
  1. किसी पर पुरुष / पर नारी, गुरु पत्नी / माता पिता के प्रति रति भाव का चित्रण होने पर श्रृंगार रस नहीं होकर श्रृंगार हास्य रसाभास माना जाता है।
  2. माता-पिता, गुरुजनों, पूज्य व्यक्तियों को हास्य का आलंबन बनाना, अर्थात उनकी हँसी उड़ाना हास्य रस नहीं होकर हास्य रसाभास माना जाता है।
  3. साधुओं / संन्यासियों / महापुरुषों में शोक या करुणा या दुःख का भाव दिखलाना करुण रस नहीं होकर करुण रसाभास माना जाता है।
  4. साधुओं, संन्यासियों / महापुरुषों में क्रोध का भाव दिखलाना रौद्र रस नहीं होकर रौद्र रसाभास माना जाता है।
  5. साधुओं, संन्यासियों, महापुरुषों अथवा किसी वीर पुरुष में भय का भाव दिखलाना भयानक रस नहीं होकर भयानक रसाभास माना जाता है।
  6. किसी असहाय / निर्बल / शस्त्रहीन व्यक्ति को मारने में वीरता का भाव दिखलाना भी वीर रस नहीं होकर वीर रसाभास माना जाता है।
  7. किसी यज्ञ में की जाने वाली पशुबलि को देखकर घृणा भाव उत्पन्न होना वीभत्स रस नहीं होकर वीर रसाभास माना जाता है।
  8. किसी जादूगर के जादुई कार्यों को देखकर आश्चर्य प्रकट करना अद्भुत रस नहीं होकर अद्भुत रसाभास माना जाता है।
  9. किसी नीच या अधम प्राणी में राम या निर्वेद भाव दिखलाना शांत रस नहीं होकर शांत रसाभास माना जाता है।

प्रश्न: "रे नृप बालक कालबस, बोलत तोहि न सँभार धनुहि सम त्तिपुरारि धनु, विदित सकल संसार" प्रस्तुत पद में कौन सा रस है?

(A) वीर रस (B) वीर रसाभास (C) रौद्र रस (D) रौद्र रसाभास

कारण: प्रस्तुत पद में मुनि परशुराम के द्वारा लक्ष्मण पर क्रोध का भाव प्रकट किया गया है, एक ऋषि के हृदय में क्रोध का भाव होने के कारण यहाँ रौद्र रस नहीं होकर रौद्र रसाभास माना गया है।

2. भावाभास

- भावाभास शब्द 'भाव' + 'आभास' के योग से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है "किसी भाव का आभास होना"।
- अर्थात, जब किसी पद में मूल या प्रधान रस तो कोई और होता है एवं उस प्रधान रस के साथ किसी अन्य रस के भाव भी दिखला दिये जाते हैं तो वहाँ वह भाव नहीं माना जाता, बल्कि भावाभास स्थिति मानी जाती है।

  जैसे – **दर्पण लखकर अपने, प्रियतम की हँसती छाया। आँखें लाल हुई उसकी, शंका ने चरण बढ़ाया।।**

- प्रस्तुत पद में मूलतः श्रृंगार रस है।
- इस प्रधान श्रृंगार रस के साथ-साथ यहाँ आँखें लाल होना भाव को भी दर्शाया गया है, जो मूलतः रौद्र रस का भाव माना जाता है।
- इस प्रकार, श्रृंगार रस के साथ रौद्र रस के भाव / क्रोध को भी दर्शा दिये जाने के कारण यहाँ भावाभास की स्थिति मानी जाती है।

3. भावोदय

- जब किसी पद में एक साथ दो भावों का वर्णन किया जाता है, उन दोनों भावों के परस्पर तुलना करने पर यदि द्वितीय भाव अधिक चमत्कारपूर्ण या प्रभावशाली दिखलाई पड़ता है, तो वहाँ भावोदय की स्थिति मानी जाती है।

  जैसे – ***चलत देखि आभारु सुनि, उहि परोसिहि नाह। लसि तमासे की दृंगनु, हाँसी ऑसुनु माह।।***
- प्रस्तुत पद में नायिका के ह्रदय में उत्पन्न होने वाले दो भावों (अश्रुपात व हास्य) का वर्णन किया गया है।
- इन दोनों भावों की परस्पर तुलना करने पर द्वितीय भाव (हास्य) ही अधिक प्रभावशाली नजर आता है। अतएव यहाँ भावोदय की स्थिति मानी जाती है।

4. भावशांति

- जब किसी पद में एक साथ दो भावों का वर्णन किया जाता है, उन दोनों भावों की परस्पर तुलना करने पर यदि प्रथम भाव ही अधिक चमत्कारपूर्ण या प्रभावशाली दिखलाई पड़ता है, तो वहाँ भाव शांति की स्थिति मानी जाती है।

  जैसे – ***प्रभु प्रलाप सुनि कान, विकल भए वाना निकर आय गयउ हनुमान जिमि करूणा महें वीर रस।।***
- प्रस्तुत पद में वानर समूह के ह्रदय में उत्पन्न होने वाले दो भावों (करूणा व वीरता) का वर्णन किया गया है। इन दोनों की परस्पर तुलना करने पर प्रथम भाव (करूणा) ही अधिक प्रभावशाली नजर आता है। अतएव यहाँ भाव शांति की स्थिति मानी जाती है।

5. भाव संधि

- जब किसी पद में **एक** साथ दो भावों का वर्णन किया जाता है, उन दोनों की परस्पर तुलना करने पर यदि दोनों भाव समान रूप से चमत्कारपूर्ण या भावशाली दिखलाई पड़ते हैं, तो वहाँ भाव संधि की स्थिति मानी जाती है।
- जैसे – ***पिय बिछुरन को दुसहु दुखु हरषु जात व्यौसा। दुरजोधन लौं देखिअति, तजत प्रान इहि बार।।***
- प्रस्तुत पद में एक नवोढा नायिका के ह्रदय में उत्पन्न होने वाले दो भावों (दुःख और हर्ष) का वर्णन किया गया है। दोनों की परस्पर तुलना करने पर दोनों भाव समान रूप से प्रभावशाली नजर आते हैं। अतएव यहाँ भावसंधि की स्थिति मानी जाती है।

6. भाव शबलता

- शबलता अर्थात् का शाब्दिक अर्थ होता है 'रंग-बिरंगा'। जब किसी पद में एक साथ अनेक भावों का वर्णन किया जाता है, तो वहाँ भाव शबलता की स्थिति मानी जाती है।

  जैसे – **ऋषिहि देखि हरषे हियो राम देखि कुम्हलाय धनुष देखि डरपै महा, चिन्ता चित्त डुलाय।।**
- प्रस्तुत पद में स्वयंवर सभा में बैठी हुई सीता के ह्रदय में उत्पन्न होने वाले अनेक भावों (हर्ष, वैवर्ण्य, भय, चिन्ता) का एक साथ वर्णन किया गया है। अतएव यहाँ भावशबलता की स्थिति मानी जाती है।

रस से संबंधित अन्य उदाहरण

1. **"एक और अजगरहि लाख, एक और मृगराक्ष विकल बटोही बीचि हवै, पड्यो मूर्च्छना खाय।।"**
   - **विषय या आलंबन**: अजगर और मृगराक्ष (शेर)
   - **आश्रय**: बटोही (राहगीर)
   - **अनुभाव**: सात्विक (प्रलय)
   - **संचारी भाव**: त्रास (त्रास का अर्थ भय होता है)
   - **स्थायी भाव**: भय
   - **रस**: भयानक

2. **"दिखरावा निज मातहि, अद्भुत रूप अखंड / रोम रोम प्रति लगे, कोटि कोटि ब्रह्मंड"।।**
   - **विषय या आलंबन**: बालक कृष्ण
   - **आश्रय**: यशोदा
   - **अनुभाव**: सात्विक (रोमांच)
   - **संचारी भाव**: विबोध/(हर्ष)
   - **स्थायी भाव**: विस्मय
   - **रस**: अद्भुत (दिव्य दर्शनज)
3. **"हाथ गह्मे प्रभु को कमला, कहे नाथ कहा तुमने चित्तधार, तुंदुल खाय मुट्ठी हुई दीन, कियो तुमने हुई लोक विहारी, खाय मुट्ठी तिसरी अब नाथ, कहाँ निष बास की आस बिसारी रंकहि आयु समानु कियो तुम, चाहत आपनु होत भिखारी।**
   - **विषय या आलंबन**: सुदामा
   - **आश्रय**: कृष्ण
   - **अनुभाव**: कायिक
   - **संचारी भाव**: गर्व
   - **स्थायी भाव**: उत्साह
   - **रस**: वीर
4. **"पाँव बिहाल बिबाइन सो भये, कंटक जाल लगे पुनि जोये। हाय महादुख पायो सखा तुम, आये इते न किते दिन खोयें। देखि सुदामा की दीन दशा करुण करिकै करुणानिधि रोये। पानि परात को हाथ छुयो नहि, नैननि के जल सो पग धोये"**
   - **विषय या आलंबन**: सुदामा
   - **आश्रय**: कृष्ण
   - **अनुभाव**: सात्विक अनुपात
   - **संचारी भाव**: विषाद
   - **स्थायी भाव**: शोक
   - **रस**: करुण (परनिष्ठ)
5. **"मेवाड़ केसरी देख रहा, केवल रण वह का न तमासा था। वह दौड़ - दौड़ रण करता था, वह मान रक्त का व्यासा था।**
   - **विषय या आलंबन**: मानसिंह
   - **आश्रय**: मेवाड़ केसरी
   - **अनुभाव**: कायिक
   - **संचारी भाव**: गर्व
   - **स्थायी भाव**: उत्साह
   - **रस**: वीर रस (युद्धवीर)
   - नोट: उत्साह के साथ हमेशा गर्व संचारी भाव होता है।
6. **बौहनी त्रासति मुख नटति ऑखिन सूं लपटति। ऐंचि छुड़वती इहि कर, आगे आवति जीति।।**
   - **आलंबन या विषय**: नायिका
   - **आश्रय**: नायका
   - **अनुभाव**: कायिक / वाचिक
   - **संचारी भाव**: त्रास
   - **स्थायी भाव**: रति
   - **रस**: श्रृंगार (संयोग)
7. **"पिय सों कहो संदेसड़ा, हे भँवरा! हे काग! सो धनि विरहे जरी मुई, तेहि को धुआँ हम लाग।"**
   - **आलंबन या विषय**: राजा रत्नसेन
   - **आश्रय**: पद्मावती
   - **अनुभाव**: सींच (कायिक)
   - **संचारी भाव**: मरण
   - **स्थायी भाव**: रति
   - **रस**: श्रृंगार रस (वियोग)
8. **"वरदन्त की पंगति, कुंदकली अधराधर पल्लव खोलन की। चपला चमके धन बीच, जुगैं छवि मोतीनि माल अमोलक की।। घुँघरारि लटे लरकै मुख, उपर कुंडल लोल कलोपन की। निवछावरि प्राण करैं तुलसी, बलि जाऊ लला इन बोलन की।।**
   - **विषय या आलंबन**: बालक राम
   - **आश्रय**: दशरथ एवं अयोध्या की स्त्रियाँ
   - **अनुभाव**: आहार्य
   - **संचारी भाव**: हर्ष
   - **स्थायी भाव**: वत्सल
   - **रस**: वात्सल्य

अलंकार

अलंकार शब्द की उत्पत्ति एवं अर्थ:

- अलंकार शब्द 'अलम् (शोभा) + कार' (करने वाला) के योग से बना है। अर्थात्, किसी भी पदार्थ की शोभा में वृद्धि करने वाला अन्य पदार्थ ही अलंकार कहलाता है।
- **साहित्य के क्षेत्र में:** किसी काव्य की शोभा (सुंदरता) में वृद्धि करने वाले पदार्थ (शब्द एवं अर्थ) को ही अलंकार कहा जाता है। **जैसे** –
  (i) यमराज ने सावित्री से कहा, "पति को छोड़कर और कोई वरदान ले लो।"
  (ii) यमराज ने सावित्री से कहा, "वर को छोड़कर और वर ले लो।" यहाँ द्वितीय कथन में कवि ने "वर" शब्द का इस प्रकार प्रयोग किया है कि एक ही शब्द दो अर्थ प्रकट कर रहा है। अतः यह आलंकारिक पद माना जाएगा।

अलंकार की परिभाषाएँ:

1. **आचार्य दंडी (काव्यादर्श) के अनुसार:** "काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते।" अर्थात् काव्य की शोभा में वृद्धि करने वाले धर्म (शब्द एवं अर्थ) ही अलंकार कहलाते हैं।
2. **आचार्य वामन (काव्यालंकार सूत्रवृत्ति) के अनुसार:** (i) "काव्यशोभायाः कराश्च धर्माः गुणाः। तदतिशयहेतवस्त्वलंकाराः।" अर्थात् काव्य की शोभा में वृद्धि करने वाले धर्म तो काव्य गुण कहलाते हैं, और उन गुणों का अत्यधिक बढ़ा-चढ़ाकर प्रयोग अलंकार है। (ii) "सौन्दर्यमेवालंकारः।" अर्थात् सौंदर्य ही अलंकार कहलाता है।
3. **आचार्य भामह (काव्यालंकार) के अनुसार:** "न कान्तमपि निर्भूषं विभाति वनितामुखम्।" अर्थात् जैसे स्त्री का सुंदर मुख भी आभूषणों के बिना शोभायुक्त नहीं होता, वैसे ही श्रेष्ठ काव्य अलंकारों के बिना शोभायुक्त नहीं होता।
4. **अग्निपुराण (महर्षि वेदव्यास) के अनुसार:** "अलंकार रहिता विधवेव सरस्वती।" अर्थात् अलंकार से रहित काव्य विधवा स्त्री के समान माना जाता है।
5. **आचार्य पीयूषवर्ष जयदेव (चन्द्रालोक 13/4) के अनुसार:** "अङ्गीकरोति यः काव्यं शब्दार्थावनलंकृतौ। स न मन्यते कस्मादनुष्णमनलंकृती॥" अर्थात् जो विद्वान अलंकारों से रहित शब्दार्थ को काव्य के रूप में स्वीकार करते हैं, वे अग्नि को भी उष्णता से रहित मान सकते हैं। जैसे अग्नि से तेज अलग नहीं किया जा सकता, वैसे ही काव्य से अलंकार नहीं।
6. **आचार्य केशवदास के अनुसार:** "जदपि सुजाति सुलच्छनि, सुबरन सरस सुवृत्त। भूषण बिनु न विराजई, कविता वनिता मित॥" अर्थात् जैसे गुणों से युक्त स्त्री भी बिना आभूषण के नहीं सजती, वैसे ही गुणयुक्त कविता भी अलंकारों के बिना शोभायुक्त नहीं होती।
7. **आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार:** "भावों का उत्कर्ष दिखाने के लिए एवं वस्तुओं के रूप, गुण, क्रिया इत्यादि का अधिक तीव्रता से अनुभव करवाने वाली युक्ति अलंकार कहलाती है।"
8. **डॉ. रामकुमार वर्मा के अनुसार:** "अलंकारों के प्रयोग से भाषा एवं भावों की नग्नता दूर होकर उनमें सौंदर्य एवं सुषमा की सृष्टि होती है।"
9. **अरस्तू के अनुसार:** "भाषा को लोक-सामान्य के स्तर से ऊपर उठाने वाले धर्म ही अलंकार कहलाते हैं।"
10. **आचार्य वामन के अनुसार (पुनः):** "सौन्दर्यमयः अलंकारः" — "काव्यशोभा:" अर्थात् काव्य का सौंदर्य ही अलंकार कहलाता है।

बामण सौंदर्य (सभी विद्वानों की सारणी)

क्रम	रचनाकार	ग्रंथ / रचना	काल/शताब्दी
1	आनंदवर्धन	ध्वन्यालोक (चार उद्योग)	9वीं शताब्दी
2	राजशेखर	काव्य मीमांसा (18 अध्याय)	10वीं
3	भट्ट नायक	हृदय दर्पण	10वीं
4	कुन्तक	वक्रोक्ति जीवितम् (चार उन्मेष)	11वीं मध्य
5	धनंजय	दशरूपकम (4 प्रकार)	11वीं पूर्वार्ध
6	राजा भोज	1. सरस्वतीकंठाभरण (5 परिच्छेद)	
		2. श्रृंगार प्रकाश (36 अध्याय)	11वीं
7	क्षेमेन्द्र	1. औचित्य विचार चर्चा (39 कारिकाएँ)	
		2. कविकांताभरण (5 संधियाँ)	11वीं
8	वाग्भट्ट I	वाग्भट्टालंकार (5 परिच्छेद)	11वीं उत्तरार्ध
9	हेमचंद्र सूरी	काव्यानुशासन (8 अध्याय)	12वीं
10	वाग्भट्ट II	काव्यानुशासन (5 अध्याय)	14वीं
11	विश्वनाथ	साहित्यदर्पण (10 परिच्छेद)	14वीं
12	रूप गोस्वामी	उज्ज्वल नीलमणि (20 प्रकरण)	16वीं पूर्वार्ध
13	केशव मिश्र	अलंकार शेखर (8 रत्न, 12 मरीचियाँ)	16वीं उत्तरार्ध

अलंकारों के विवेचन का इतिहास

- **प्रयोग की दृष्टि से** — साहित्य में अलंकारों का प्रयोग ऋग्वेद काल से ही शुरू हो गया था। हमारे आदिग्रंथ ऋग्वेद में अनेक अलंकारों का सुंदर प्रयोग किया गया है।
- **विवेचन की दृष्टि से** — साहित्य में अलंकारों का विवेचन विविध विद्वानों के द्वारा निम्नानुसार किया गया है:

क्रम	विद्वान का नाम	रचना का नाम	स्थितिकाल	स्वीकृत अलंकारों की संख्या	अतिरिक्त जानकारी
1	आचार्य भरतमुनि	नाट्यशास्त्र	ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी	4	इसे "पंचम वेद" कहा गया है; उपमा, यमक, रूपक, दीपक शामिल
2	महर्षि वेदव्यास	अग्निपुराण	चतुर्थ शताब्दी ई.	14	संशोधित
3	आचार्य भामह	काव्यालंकार	6वीं शताब्दी	38	यह "अलंकार सम्प्रदाय" के प्रवर्तक माने जाते हैं
4	आचार्य दण्डी	काव्यादर्श	6वीं–7वीं शताब्दी	52	अलंकारवादी आचार्य हैं
5	आचार्य वामन	काव्यालंकार सूत्रवृत्ति	8वीं शताब्दी	52	5 अधिकरण
6	आचार्य उद्भट	काव्यालंकार सारसंग्रह	9वीं शताब्दी	52	—
7	आचार्य रुद्रट	काव्यालंकार	9वीं शताब्दी	66	—

8	आचार्य मम्मट	काव्यप्रकाश	12वीं शताब्दी	103	—
9	पं. विश्ववर्धन जम्बूक	चंद्रालोक	13वीं / पूर्वार्द्ध	104	(1) शाब्दालंकार = 04, (2) अर्थालंकार = 100, (3) मौलिक = 16, भेद = 4
10	आचार्य अप्पय दीक्षित	कुबलयानंद	16वीं शताब्दी (उत्तरार्ध)	133	—
11	पंडितराज जगन्नाथ	रसगंगाधर	17वीं शताब्दी	180	—

अलंकारों का वर्गीकरण

- साहित्य जगत में प्रयुक्त होने वाले समस्त अलंकारों को प्रमुखतः 3 श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है:
  1. **शब्दालंकार** यमक, अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश
  2. **अर्थालंकार**
  3. **उभयालंकार** श्लेष, वक्रोक्ति, पुनरुक्तिप्रकाश

1. **शब्दालंकार** — जब किसी पद में किसी शब्द विशेष के प्रयोग के कारण अलंकारों की प्राप्ति होती है, तो वह शब्दालंकार माना जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि किसी पद में प्रयुक्त किसी शब्द को घटाकर उसका अन्य कोई पर्यायवाची शब्द लिख देने पर अलंकार नष्ट हो जाए, तो वह शब्दालंकार माना जाता है। इस श्रेणी में प्रमुखतः अनुप्रास, यमक आदि अलंकार पुनरुक्तिप्रकाश शामिल किये जाते हैं।
2. **अर्थालंकार** — जब किसी पद में किसी अर्थ विशेष के प्रयोग के कारण अलंकार की प्राप्ति होती है, तो अर्थालंकार माना जाता है। यदि किसी शब्द को हटाकर पर्यायवाची प्रयोग करने पर भी अलंकार बना रहता है, तो वह अर्थालंकार कहलाता है। इस श्रेणी में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, दृष्टान्त, मानवीकरण इत्यादि अलंकार शामिल किये जाते हैं।
3. **उभयालंकार** — जब किसी पद में शब्द एवं अर्थ, दोनों के प्रयोग के कारण अलंकार की प्राप्ति होती है, तो वह उभयालंकार माना जाता है। इस श्रेणी में श्लेष, वक्रोक्ति, पुनरुक्तिप्रकाश आदि अलंकार शामिल किये जाते हैं।

पाठ्यक्रमानुसार निर्धारित प्रमुख अलंकार

1. अनुप्रास

- **लक्षण:**
  - ✓ "स्वर का सम्मेलन जहाँ चाहे होय न होय, व्यंजन की समता मिले अनुप्रास है सोय।"
  - ✓ "शब्दसाम्यमनुप्रासः वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्।"
  - ✓ "वर्णसाम्यमनुप्रासः।"
- **अर्थ:** जब किसी पद में एक ही व्यंजन वर्ण का अथवा व्यंजनों के समूह का एक निश्चित क्रम में दोहराव किया जाता है, तो वहाँ अनुप्रास अलंकार माना जाता है।
- **उदाहरण:**
  - ✓ "भगवान भक्तों की भयंकर भांति भीति भगाए।" भ वर्ण की पुनरावृत्ति
  - ✓ "खिड़कियों के खड़कने से खड़कता है खड़कसिंह, खड़कसिंह के खड़कने से खड़कती है खिड़कियाँ।"
  - ✓ "गंधी गंध गुलाब की गंवई गाहक कौन।" ग वर्ण की पुनरावृत्ति

अनुप्रास के भेद = 5

साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ के अनुसार अनुप्रास के प्रमुख भेद:

1. **हेकानुप्रास** दो व्यंजन केवल दो बार आएं उदाहरण:
   - ✓ "कानन कठिन भयंकर भारी, घोर धाम हिम बार बयारी।"
   - ✓ "बाल बेलि सुखी सुखद इहि, रूखे रुख धाम।"
2. **व्रत्यनुप्रास** व्यंजन समूह का दो से अधिक बार प्रयोग हो उदाहरण:
   - ✓ "गंधी गंध गुलाब की, गंवई गाहक कौन।"
   - ✓ "किसबी किसान कुल बाणिक, भिखारी भाट चाकर चपल नट चोर चार चेटकी।"
3. **श्रुत्यनुप्रास** एक ही उच्चारण स्थान वाले व्यंजन वर्णों का प्रयोग उदाहरण:
   - ✓ "तुलसीदास सीदत निस दिन देखत तुम्हारी निठुराई।"
   - ✓ "दारिद दसानन दबाई, दुनी दीनबंधु दूरित दहन देखी तुलसी हाहा करी।"
   - ✓ "दिनांत या वे दीननाथ डूबते थे।"
4. **लाटानुप्रास** सम्पूर्ण शब्द या पद का दोहराव, अर्थ में कोई परिवर्तन न हो उदाहरण:
   - ✓ "पूत कपूत तो क्यों धन सांचे, पूत सपूत तो क्यों धन सांचे।"
   - ✓ "भिला तेज से तेज तेज की, वह सच्ची अधिकारी सी।"
   - ✓ "राम राम है राम कही, दशरथ ने त्यागे प्राण।"
5. **अन्त्यानुप्रास** अंत में तुक मिलती हो, और ऊपर के चार भेदों में से कोई लक्षण न हो उदाहरण:
   - ✓ "धीरज, धरम, मित्र अरु नारी, आपद काल परखिए चारी।"
   - ✓ "हंसा बगुला एक से, रहत सरोवर मांहि। बगुला टूंढ़ै माछरी, हंसा मोती खांहि।"

अन्य उदाहरण:

1. **व्रत्यनुप्रास** "किसबी किसान कुल बाणिक भिखारी भाट। चाकर चपल नट चोर चार चेटकी।।"
2. **श्रुत्यनुप्रास** "दारिद दशानन दबाई, दुनी दीनबंधु। दूरित दहन देखी तुलसी हाहा करी।।"

2. यमक अलंकार

- **लक्षण:** "एका शब्द फिरि फिर जहाँ परै अनेकन बार। अर्थ और ही और हो सो यमकालंकार।" अर्थात् – जब किसी पद में एक ही शब्द का एक से अधिक बार प्रयोग कर दिया जाता है, एवं अर्थ ग्रहण करने पर उन शब्दों के अलग-अलग अर्थ प्रकट होते हैं, वहाँ यमक अलंकार माना जाता है।
- **उदाहरण:**
  1. "कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय। वा खाय बोराय, जग इहि पाय बोराय।" प्रस्तुत पद में 'कनक' शब्द का दो बार प्रयोग हुआ है। दोनों स्थानों पर अलग-अलग अर्थ हैं – पहला 'कनक' = सोना, दूसरा 'कनक' = धतूरा। इसलिए यहाँ यमक अलंकार माना जाता है।
  2. "कबीरा सोई पीर है, जे जानही पर पीर। जे पर पीर न जानै, वे काफिर बेपीर।।" यहाँ भी 'पीर' शब्द दो बार आया है, परंतु भिन्न अर्थ में – पहली बार 'पीर' = संत/गुरु दूसरी बार 'पीर' = दुःख/कष्ट। यह भी यमक अलंकार का उदाहरण है।
  3. **नोट:** जब एक शब्द बार-बार आता है लेकिन उसका अर्थ नहीं बदलता, तो वह लाटानुप्रास अलंकार कहलाता है। जबकि जब एक ही शब्द का प्रयोग बार-बार हो और हर बार उसका अर्थ बदले, तब वह यमक अलंकार होता है।

यमक अलंकार के भेद: 2

1. अभंग यमक **2. समग्र यमक**

1. अभंग यमक:

- इसका शाब्दिक अर्थ है – 'जो टुकड़ों में न हो'। अर्थात् – जब किसी पद में किसी शब्द के टुकड़े किए बिना ही उसका दोहराव दिखलाई पड़ता है तो वहाँ अभंग यमक अलंकार माना जाता है।
- **उदाहरण:**
  (i) "वर को छोड़ और वर ले लो।" पहला 'वर' = पति दूसरा 'वर' = वरदान
  (ii) "सजना है मुझे सजना के लिये।" पहला 'सजना' = सजना (सजाना) दूसरा 'सजना' = पति
  (iii) "भूरिति मधुर मनोहर देखी, भयु विदेह विदेह विशेष।" पहला 'विदेह' = जनक की पुत्री सीता दूसरा 'विदेह' = होश खो बैठने वाला
  (iv) "ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहनवारी, ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहाती है।" पहला 'मंदर' = महल दूसरा 'मंदर' = पर्वत
  (v) "सारंग ले सारंग उड़्यो, सारंग पुग्यो आय।" पहला 'सारंग' = मोर दूसरा 'सारंग' = बादल
  (vi) "काली घटा का घमंड घटा, नभ मण्डल तारक वृंद खिले।" पहला "घटा" = बादल (मेघमाला) दूसरा "घटा" = कम होना (घमंड का घटना)
  (vii) "दीपक ले दीपक चली कर, ओट। जे दीपक दीपक नहीं, तो दीपक करता चोट।"
  (viii) "हुरी ने नारद को ही दी रूप दिया।"

2. समंग यमक (या सथंग यमक):

- 'समंग' का शाब्दिक अर्थ है – जिसके टुकड़े किए जा सकते हैं। जब किसी पद में प्रयुक्त किसी शब्द के टुकड़े करने पर ही दोहराव दिखलाई पड़ता है तो वहाँ समंग यमक अलंकार माना जाता है।
- **उदाहरण:**
  (i) "कुमुदिनी मानस मोदिनी कहीं।" 'कुमुदिनी' = कमलिनी 'मानस मोदिनी' = मन को प्रसन्न करने वाली
  (ii) "मचलते चलते ये जीव हैं, दिवस में वस में रहते नहीं। विमलता मल ताप हटा रही, विचरते चरते हैं सुख में समी।"
  (iii) "मोहन अब मन मोहें है, मोहन अब मन मोहें।" पहला "मोहन" = कृष्ण दूसरा "मोहन" = मन को मोहित करने वाला 'मन मोहें' = मन को आकर्षित करना
  (iv) "हरिनी के नैनन ते, हरिनी के ये नैन।"
  (v) "आयो सखी सावन, विरह सरसावन लग्यो है बरसावन सलिल चहुँ ओर ते।"

3. श्लेष अलंकार

- **लक्षण:** "प्रकट अनेकन अर्थ जहाँ, एक शब्द से होय। ताहि कहत हैं श्लेष कवि, द्वे विधि होवे सोय॥"
- **अर्थ:** जब किसी पद में प्रयुक्त किसी एक ही शब्द के अलग-अलग प्रसंग/संदर्भ के अनुसार अलग-अलग अर्थ ग्रहण कर लिए जाते हैं, तो वहाँ श्लेष अलंकार माना जाता है।

उदाहरण 1:

"रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून। पानी गए न उबरे, मोती, मानस चून॥"

- ✓ प्रस्तुत पद में प्रयुक्त रेखांकित शब्द पानी के निम्नानुसार 3 अर्थ ग्रहण किए जाते हैं:
  (i) मोती के संदर्भ में चमक
  (ii) मनुष्य के संदर्भ में इज्जत (प्रतिष्ठा)
  (iii) चूने के संदर्भ में जल
- ✓ इस प्रकार एक ही शब्द के 3 अर्थ प्रकट हो जाने के कारण यहाँ श्लेष अलंकार माना जाता है।